✺ 19 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] बाप की ही सारी दुनिया है– नई वा पुरानी। नई दुनिया बाप की है तो पुरानी नहीं है क्या? बाप ही सभी को पावन बनाते हैं। पुरानी दुनिया भी मेरी है। सारी दुनिया का मालिक मैं ही हूँ। भल मैं नई दुनिया में राज्य नहीं करता हूँ परन्तु है तो मेरी ना। मेरे बच्चे मेरे इस बड़े घर में भी बहुत सुखी रहते हैं और फिर दु:ख भी पाते हैं। यह खेल है। यह सारी बेहद की दुनिया हमारा घर है। यह बड़ा माण्डवा है ना।

2] तुम समझते हो हम बाबा के बच्चे बहुत सुखी थे जबकि पवित्र थे। अब अपवित्र बनने से दु:खी हो जाते हैं। काम चिता पर बैठ काले पतित बन जाते हैं। मूल बाते है कि बाप को भूल जाते हैं। जिस बाप ने इतना ऊंच पद दिया। गाते भी हैं ना तुम मात पिता....सुख घनेरे थे। सो फिर तुम अभी ले रहे हो क्योंकि अब दु:ख घनेरे हैं।

3] बाप बच्चों से पूछते हैं– अभी तुम नर्कवासी हो या स्वर्गवासी हो? जब कोई मरता है तो झट कह देते हैं स्वर्गवासी हुआ अर्थात् सब दु:खों से दूर हुआ। फिर नर्क की चीज़ें उनको क्यों खिलाते हो? यह भी समझते नहीं। बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तुम बच्चों को राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चे, मैं तुमको यह नॉलेज सुनाता हूँ। मेरे में ही यह नॉलेज है। ज्ञान सागर मैं हूँ।

4] बाप कहते हैं तुम अपने धर्म को भूल कितने धर्मों में घुस पड़े हो। अपने भारत का नाम ही हिन्दुस्तान रख दिया है और फिर हिन्दु धर्म कह दिया है। वास्तव में हिन्दू धर्म तो कोई ने स्थापन ही नहीं किया है। मुख्य धर्म हैं ही चार– देवी-देवता, इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन।

✺ योग-

1] कर्मयोगी अर्थात् कर्म के समय भी योग का बैलेन्स हो। सेवा अर्थात् कर्म और स्व पुरूषार्थ अर्थात् योगयुक्त– इन दोनों का बैलेन्स रखने के लिए एक ही शब्द याद रखो कि बाप करावनहार है और मैं आत्मा करनहार हूँ।

✺ धारणा-

1] बाप तो कहते हैं जिन रोया तिन खोया। सतयुग में रोने की बात नहीं। यहाँ भी बाप कहते हैं रोना नहीं है। रोते हैं द्वापर-कलियुग में। सतयुगी कभी रोते नहीं हैं।

✺ सेवा-

1] मीठे बच्चे– बाप समान रहमदिल बनो, रहमदिल बच्चे सबको दु:खों से छुड़ाकर पतित से पावन बनाने की सेवा करेंगे।

2] तुम कोई से भी पूछो– जिसको ईश्वर, भगवान्, रचता कहते हो उनको तुम जानते हो? क्या ठिक्कर-भित्तर में ईश्वर कहना ही जानना है? पहले अपने को तो समझो। मनुष्य तमोप्रधान हैं तो जानवर आदि सब तमोप्रधान हैं। मनुष्य सतोप्रधान हैं तो सब सुखी बन जाते हैं। जैसा मनुष्य, वैसा उनका फर्नीचर भी होता है। साहूकार लोगों का फर्नीचर भी अच्छा होता है।

3] बाप समान रहमदिल बनना है। सबको दु:खों से छुड़ा कर पतित से पावन बनाने की सेवा करनी है।

4] नज़र से निहाल करने की सेवा करनी है तो बापदादा को अपनी नज़रों में समा लो।